IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की शास्त्रीय भाषा 'ओड़िआ'

डॉ. ड़ी. मोहिनी
पोस्ट डॉक्टोरल शोधकर्ता,सेंटर ऑफ एक्सीलेन्स,
रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, भूवनेश्वर, ओड़िशा

सारांश

भाषा के माध्यम से भाव और विचारों का आदान – प्रदान होता है। भारत एक बहु भाषी देश है जहाँ अनेक भाषा बोली और पढ़ी जाती है। भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में 22 भाषाओं को राजभाषा का दर्जा मिला इसमें भारत की प्राचीन भाषाओं में से एक ओड़िआ भाषा जो ओड़िशा राज्य में बोली जाती है। मार्च 11, 2014 को भारत सरकार द्वारा ओड़िआ को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिला। उसी दिन को हर साल 'शास्त्रीय ओड़िआ भाषा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। "इस भाषा की मूल उत्पत्ति आर्यभाषा या संस्कृत है। भारतीय आर्यभाषा यूरोपीय या इंडोयूरोपीय भाषा परिवार की सतम् वर्ग अंतर्गत भारतीय-ईरानी या इंडोइरानीयन आर्यभाषा की भारतीय आर्य उपशाखा है।"[1] ओड़िआ भाषा भारतीय आर्यभाषा परिवार की पूर्वी भाषा परिवार में आती है। आसमीय, बांग्ला, बिहारी और ओड़िआ इसी भाषा समूह में आती है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है यहाँ अनेक भाषाएँ, क्षेत्रिय बोलियाँ आदि का प्रयोग होता है। इनमें हजार वर्ष की प्राचीन भाषा है ओड़िआ। प्राचीन ग्रंथों में समय समय पर ओड़िशा को अनेक नाम दिए गए हैं। जैसे उत्कल, कलिंग, कंगोद, कोशल, तोषल और उड्र आदि। ओड़िआ आर्यभाषा परिवार की एकमात्र भाषा है जिसे भारत सरकार द्वारा शास्त्रीय मान्यता प्राप्त हुई। ओड़िआ भाषी लोग सिर्फ ओड़िशा में ही नहीं पूरे भारतवर्ष में फैले हैं।

मूल शब्द : बहु भाषी, शास्त्रीय, ब्राह्मीलिपि, वर्णमाला

चीनी बौद्ध भिक्षु ह्वेन त्सांग, हर्षवर्द्धन के शासन काल में भारत आया था। 15 वर्ष के भारत भ्रमण में तत्कालीन भारत का विवरण तैयार किया था। उसमें भारतीय भाषाओं का उल्लेख मिलता है। ओड़िशा में भी उन्होंने अपना पाँव रखा। "उस वक्त उन्होंने कहा था कि हालांकि वहाँ के लोग आर्यभाषा के शब्दों को भिन्न तरीके से उच्चारित करते थे फिर भी उनकी लिखावट में उत्तरभारतीय लिपि जैसा था। इससे यह पता चलता है कि संभवत: द्राविड भाषा प्रभाव से तत्कालीन ओड़िशा में प्रचलित आर्यभाषा उत्तर या मध्यभारत की भाषा से

भिन्न और उचारण में भिन्न था। और भी ह्वेन त्सांग की बातों से पता चलता है, भारतीय आर्यभाषा की कुटिल लिपि ओड़िशा में उस वक्त व्यवहृत हो चली थी।"[२] ओड़िआ लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ब्राह्मी लिपि भारत की प्राचीन लिपि है । विद्वानों का मत है कि चित्रलिपि से ही इसका विकास हुआ। ब्राह्मीलिपि से ही सभी लिपियों का जन्म हुआ है। विद्वानों के मतानुसार भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के लिपियों को तीन भागों में बाँटा गया शारदा लिपि, नागरी लिपि और कुटिल लिपि। इनमें से कुटिल लिपि को ही आगे चलकर ओड़िआ लिपि का विकास माना जाता है।

प्राचीन भारतवर्ष और ओड़िशा में लिखने का प्रधान उपकरण छेनी है जिसकी सहायता से पत्थर को खोद खोदकर लिखा जाता था। ओड़िशा के विभिन्न स्थान , खंडहर , पस्थर के ऊपर खोदे हुए अक्षर देखने को मिलते हैं जिसमें ब्राह्मी लिपि का ही प्राचीनत्तम नमूना दृश्यमान है। परवर्ती समय में ब्राह्मी लिपि की अकृतिमूलक परिवर्तन होकर गुप्तलिपि का विकास हुआ, तथ्यानुसार सन् 3 वीं और सन् 7 वीं तक यह प्रचलित रहा। ओड़िशा में इसके प्रमाण मिलते हैं। 7 वीं और 8 वीं के बाद भारत के विभिन्न प्रदेश में आंचलिक भाषा का उदय हुआ। इससे लिपियों में अंतर दिखने लगा। ओड़िआ लिपि परंपरा का आरंभ ओड़िशा के 55 गुफाओं के प्रस्थरों में खोदित चित्र और चित्र लिपि है। भाषातत्वविदों के अनुशीलन से धौली और जउगड के शिलालेखों की भाषा वर्तमान ओड़िआ भाषा के साथ मेल खाता है।

गंग सम्राट नरसिंह देव के दानपात्र में प्रयोग 'पत्न - उत्तर -पूर्व भारतीय' लिपि को ऊपरी भाग सामान्य मुड़ी हुई है उसमें ओड़िआ लिपि का प्रारम्भिक रूप दृश्यमान है। पुरी मंदिर के 'जय - विजय' तोरण के उत्तर पश्ववर्ती ओड़िआ भाषा के 12 शिलालेख प्राप्त हुए जिसमें उक्त लिपि का वृत्ताकार रूप देखने को मिला। 14 वीं और 15 वीं तक आते आते ओड़िआ लिपि का पूर्ण विकास हो गया था। "राजनैतिक दृष्टिकोण से ओड़िशा में दक्षिण भारत और उत्तर-भारत का प्रभाव सदैव रहा है। इसलिए ओड़िशा में विभिन्न प्रांत का दक्षिणात्य लिपि प्रभावित लिपि और उत्तर-भारतीय लिपि प्रभावित लिपि का प्रचलन देखा जाता है। तब मोटामोटी रूप से कहने पर ईसाई दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी में जो उत्तर-भारतीय लिपि अनुरूप अक्षर प्रचलन थी, उसमें आधुनिक ओड़िआ वर्णमाला की अधिकांश सृष्टि होने को स्वीकारा गया है।"[३] ओड़िआ लिपि के विकास को लेकर अनेक मतभेद दिखाई देते हैं। कोई बोलता है कि ओड़िआ लिपि बांग्ला लिपि से विकसित हुआ है तो कोई ओड़िआ लिपि उत्तर-भारतीय लिपि और दक्षिण भारतीय लिपि से मानते हैं।

राखाल दास बनर्जी के अनुसार- In the south the Bengali script was used throughout Orissa… the modern cursive Oriya script was developed out of the Bengali after the 15th century A.D. like the modern Assamese. परंतु यह मत भ्रमात्मक। वास्तवत: 10 वीं शताब्दी से ओड़िआ लिपि बंगाली लिपि से स्वतंत्र मार्ग में गतिकर विकसित हुई। यह विशेष रूप से नागरी, दक्षिण नागरी (उत्तरकालीन कलिंग लिपि), तामिल लिपि और तेलुगू लिपि द्वारा प्रभावित हुई थी। उत्तर भारतीय लिपि द्वारा प्रभावित होने पर बांग्ला लिपि के शिरोदेश में समांतराल रेखा रह

गया; किन्तु दक्षिण भारतीय लिपि द्वारा प्रभावित होने के फल स्वरूप ओड़िआ लिपि वृत्ताकार धारण किया। कुछ अक्षर बंगाल में कोणयुक्त होने पर ओड़िआ में कुटिलाकृत्ति हो गये। बंगाल में कुछ त्रिभुज और मोड़ परित्यक्त होने पर ओड़िआ में यह व्यवहृत हुआ।"[4] ओड़िआ भाषा के प्राचीन शिलालेखों से भी यही प्रमाण मिलता है कि उक्त भाषा प्राचीन भाषा है। सर्वप्राचीन शिलालेख है उरजाम शिलालेख जिसका समय सन् 1051 माना जाता है। "त्रयोदश शताब्दी में (सन् 1249) खोदित द्वितीय नरसिंह देव के भुवनेश्वर द्विभाषिक (तेलुगू – ओड़िआ) शिलालेख में प्राचीन ओड़िआ भाषा का रूप देखने को मिलता है।"[5] ऐसे अनेक प्रमाण मिलते हैं जिससे यह निश्चित किया जा सकता है कि ओड़िआ भाषा भारत की प्राचीन और शास्त्रीय भाषा है। सम्राट अशोक और खारबेल के अभिलेख से पालिभाषा का प्रयोग हुआ है। कुछ आलोचक पालिभाषा का जन्मस्थान कलिंग ही मानते हैं। प्रच्यतत्ववित्त जर्मन पंडित हरम्यान ओलचोनवर्ग की 'विनय पीटक' मुखबन्ध में कहा पालि कलिंग की भाषा थी। वे कहते हैं सिंहल में पालिभाषा से धर्म प्रचार होने का कारण कलिंग देश के लोगों की भाषा में ऐसे कई शब्द हैं जो ओड़िआ भाषा के समान है।

निष्कर्ष :

ओड़िशा में सूर्यवंशी के उत्थान के साथ ही ओड़िआ भाषा विकास की ओर अग्रसर हुई । सारला दास कृत 'महाभारत' से ओड़िआ भाषा को नई पहचान मिली, फिर पंचसखा आए और कवि जगन्नाथ दास कृत 'भागवत' में भाषा को मानकी रूप देने में समर्थ हुआ । समय के साथ अन्य भाषाओं की तरह उक्त भाषा में भी परिवर्तन परिलक्षित है। भाषा के इतिहास को देखा जाए तो महत्त्वपूर्ण आलोचना विशेष रूप में "मनमोहन चक्रवर्ती एक सुदीर्घ प्रबंध में (Notes on the language & literature of Orissa, I.A.S.B 1897-98) धर्म इतिहास और परवर्ती युग के द्राविड और मुंडा भाषा द्वारा प्रभावित।"[6] जर्ज ग्रियर्सन ने भी ओड़िआ भाषा इतिहास की चर्चा की है। "उनके मतानुसार ओड़िआ प्राचीन संस्कृति से भी और प्राचीनतम व्याकरण में से निवद्ध और यह केवल वैदिक संस्कृति के साथ तुलनीय।"[7] ऐसे अनेक इतिहासकारों द्वारा ओड़िआ भाषा को एक स्वतंत्र स्थान दिया गया । सन् 1919 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में ओड़िआ विभाग की स्थापना की गई जिससे ओड़िआ भाषा और साहित्य को एक नया स्तर प्राप्त हुआ। ओड़िआ भाषा साहित्य पूर्ण विकसोन्नमुख की ओर अग्रसर है कार्यालय क्षेत्र हो या औद्योगिक हर क्षेत्र में इस भाषा का प्रयोग किया जाता है । ओड़िआ भाषा साहित्य को अनूदित कर इसे उन्नत स्तर तक पहुँचा ने का प्रयास होनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. साहु, वासुदेव : ओड़िआ भाषा का उन्मेष और विकास , चौथा संस्करण-1994, पृ. सं. -1 , प्रकाशक : फ्रेंड पुब्लिशर्स, कटक ।
2. महन्ति , वंशीधर : ओड़िआ भाषा की उत्पत्ति और क्रम विकास, 1970, पृ. सं. -21 , प्रकाशक : फ्रेंड पुब्लिशर्स, कटक ।
3. राजगुरु, सत्यनारायण : ओड़िआ लिपि क्रमविकाश, 1960, पृ. सं. - 22 , प्रकाशक : ओड़िआ साहित्य अकादमी , भुवनेश्वर ।

4. राजगुरु, सत्यनारायण : ओड़िआ लिपि क्रमविकाश, 1960, पृ. सं. – 66 , प्रकाशक : ओड़िआ साहित्य अकादमी , भुवनेश्वर ।
5. राजगुरु, सत्यनारायण : ओड़िआ लिपि क्रमविकाश, 1960, पृ. सं. – 73 , प्रकाशक : ओड़िआ साहित्य अकादमी , भुवनेश्वर ।
6. महापात्र , खगेश्वर : ओड़िआ लिपि और भाषा , तृतीय संस्करण-1993 , पृ. सं. -12 , प्रकाशक : ग्रंथ मंदिर , कटक ।
7. महापात्र , खगेश्वर : ओड़िआ लिपि और भाषा , तृतीय संस्करण-1993 , पृ. सं. -12 , प्रकाशक : ग्रंथ मंदिर , कटक ।